॥ श्री ॥

षट्खण्डागम

SHATKHANDAAGAMA

आ. पुष्पदन्त-भूतबली · २वीं शती · अभिलेख १/९०

श्री धरसेनाचार्य → आ. पुष्पदन्त-भूतबली

संक्षिप्त परिचय

दिगम्बर परम्परा का प्रथम लिपिबद्ध आगम-ग्रन्थ। अंग-ज्ञान के क्रमिक ह्रास को देखकर आचार्य धरसेन ने गिरनार की चन्द्र-गुफा में पुष्पदन्त और भूतबली — इन दो मुनियों को अपना श्रुत-ज्ञान सौंपा; उसी के आधार पर छह खण्डों में यह महान सिद्धान्त-ग्रन्थ रचा गया।

जीव की विविध अवस्थाओं (गुणस्थान, मार्गणा) और कर्म-सिद्धान्त का यह आकर-ग्रन्थ शौरसेनी प्राकृत में है। इसी पर आचार्य वीरसेन ने विशाल धवला टीका लिखी, जिसकी ताड़पत्र प्रतियाँ मूडबिद्री में आज भी सुरक्षित हैं।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

षट्खण्डागम — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक १ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. पुष्पदन्त-भूतबली; रचना-काल २वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ५४) के अनुसार इनका समय ६६–१०६ है तथा गुरु श्री धरसेनाचार्य। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "षट्खंडागम" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में कसायपाहुड, समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार, अष्टपाहुड परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

कसायपाहुड · समयसार · प्रवचनसार · पंचास्तिकाय · नियमसार · अष्टपाहुड

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति १ — मूल छायाचित्र

कसायपाहुड →